


सलोकु ॥
सुखी बसै मसकीनीआ
आपु निवारि तले ॥
बडे बडे अहंकारीआ
नानक गरबि गले ॥12॥





असटपदी ॥

जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥

सो नरकपाती होवत सुआनु ॥

जो जानै मै जोबनवंतु ॥

सो होवत बिसटा का जंतु ॥

आपस कउ करमवंतु कहावै ॥


जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥


धन भूमि का जो करै गुमानु ॥

सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥

करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥

नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥१॥





धनवंता होइ करि गरबावै ॥

त्रिण समानि कछु संगि न जावै ॥

बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥

पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥

सभ ते आप जानै बलवंतु ॥


खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥


किसै न बदै आपि अहंकारी ॥

धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥


गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥

सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥





कोटि करम करै हउ धारे ॥
स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥
आपस कउ जो भला कहावै ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥
सरब की रेन जा का मनु होइ ॥
कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥





जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥

तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥

जब इह जानै मै किछु करता ॥

तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥

जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥

तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥


जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥

तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥


प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥


गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥







सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥
अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥
नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥
बडभागी किसै परापति होइ ॥
करन करावन आपे आपि ॥
सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥





करन करावन करनैहारु ॥
इस कै हाथि कहा बीचारु ॥
जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ ॥
आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥
जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥
सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥
बूझै देखै करै बिबेक ॥
आपहि एक आपहि अनेक ॥
मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥
नानक सद ही रहिआ समाइ ॥६॥





आपि उपदेसै समझै आपि ॥

आपे रचिआ सभ कै साथि ॥

आपि कीनो आपन बिसथारु ॥

सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥

उस ते भिन कहहु किछु होइ ॥


थान थनंतरि एकै सोइ ॥


अपुने चलित आपि करणैहार ॥

कउतक करै रंग आपार ॥

मन महि आपि मन अपुने माहि ॥

नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥





सति सति सति प्रभु सुआमी ॥

गुर परसादि किनै वखिआनी ॥

सचु सचु सचु सभु कीना ॥

कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥

भला भला भला तेरा रूप ॥

अति सुंदर अपार अनूप ॥

निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥

घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥

पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥

नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥

